इकाई 3 आर्थिक निष्पादन के माप*

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 राष्ट्रीय आय मापने की विधियाँ

3.2.1 व्यय विधि

3.2.2 आय विधि

3.2.3 मूल्य वर्धित विधि

3.3 समग्र बचत तथा धन (सम्पत्ति) के माप

3.4 वास्तविक तथा मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद

3.5 सकल घरेलू उत्पाद की सीमाएँ

3.6 भुगतान शेष : खुली अर्थव्यवस्था के लिए राष्ट्रीय आय लेखांकन

3.6.1 चालू खाता

3.6.2 पूँजी खाता

3.7 सार संक्षेप

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप

- राष्ट्रीय आय के माप की विभिन्न विधियों का वर्णन कर सकेंगे;
- बचत तथा धन के मध्य अन्तर कर सकेंगे;
- वास्तविक तथा मौद्रिक आय के बीच अंतर कर सकेंगे; और
- एक अर्थव्यवस्था के भुगतान शेष की अवधारणा का वर्णन कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हम राष्ट्रीय आय लेखांकन की विभिन्न अवधारणाओं की चर्चा कर चुके हैं। इस इकाई में हम राष्ट्रीय आय को मापने की विधियों की चर्चा करेंगे। राष्ट्रीय आय का मापन इस अर्थ में लेखा ढाँचे में निष्पादित किया जाता है कि राष्ट्रीय आय में सम्मिलित की जाने वाली प्रत्येक मद से जुड़ी एक आर्थिक क्रिया होती है। राष्ट्रीय आय एक प्रवाह है तथा यह एक विशिष्ट समयावधि के लिए मापी जाती है, सामान्यतः एक वर्ष के लिए। हाल ही के समय में, कुछ समग्रों जैसे सकल घरेलू उत्पाद को त्रैमासिक आधार पर मापा जाता है। राष्ट्रीय आय को निम्नलिखित पदों के रूप में मापा जाता है:

1) आर्थिक अभिकर्त्ताओं के द्वारा अन्तिम उत्पादन की खरीद द्वारा खर्च की गई राशि (व्यय दृष्टिकोण)
2) उत्पादन के साधनों द्वारा प्राप्त आय (आय दृष्टिकोण)

* डॉ० सरबजीत कौर, ज़ाकिर हुसैन कॉलेज(संध्या), दिल्ली विश्वविद्यालय

3) उत्पादित अन्तिम उत्पाद की मात्रा (उत्पाद दृष्टिकोण)

तीनों विधियाँ आर्थिक क्रियाओं को देखने के तीन अलग–अलग दृष्टिकोण प्रदान करती हैं लेकिन ये एक अर्थव्यवस्था में तात्कालिक आर्थिक क्रियाओं के समान माप प्रदान करते हैं।

3.2 राष्ट्रीय आय मापने की विधियाँ

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि राष्ट्रीय आय को मापने की तीन विधियाँ हैं। हम नीचे विस्तार से प्रत्येक विधि का वर्णन करते हैं।

3.2.1 व्यय विधि

एक दी गई समयावधि के दौरान घटित होने वाली आर्थिक क्रियाओं की मात्रा को अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय की जाने वाली राशि के पद में मापा जा सकता है। आपको ध्यान देना चाहिए कि इस विधि में पुनः बिक्री के लिए खरीदी गई वस्तुओं पर व्यय सम्मिलित नहीं किया जाता है। इस विधि के अनुसार, आर्थिक क्रिया को दर्शाने के लिए बाजार कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद पर अन्तिम व्यय को शामिल किया जाता है। इस विधि के अंतर्गत, निजी उपभोग व्यय (Private Consumption Expenditure - C), निजी निवेश व्यय (Private Investment Expenditure – I), सरकारी व्यय (Government Expenditure - G) तथा विशुद्ध विदेशी व्यय अथवा विशुद्ध निर्यात (Net Foreign Expenditure Or Net Export (NX) सकल घरेलू उत्पाद के घटक हैं। अतः इस विधि में, अर्थव्यवस्था के अन्तिम व्यय को प्राप्त करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों यथा घरेलू, व्यावसायिक, सरकारी तथा शेष विश्व के द्वारा किए गए व्यय को एक साथ शामिल किया जाता है। इस विधि के अनुसार, बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (Y) एक वित्तीय वर्ष के दौरान एक अर्थव्यवस्था में सभी अन्तिम व्यय का योग है, जिसे निम्नांकित आय–व्यय सर्वसमिका (Income- Expenditure Identity) के द्वारा प्रदर्शित किया गया है:

$$Y = C + I + G + NX$$

सकल घरेलू उत्पाद से विभिन्न समष्टिगत समग्रों को प्राप्त करने की प्रक्रिया की इकाई 2 में चर्चा की गई है। हम सकल घरेलू उत्पाद के घटकों पर निम्न प्रकार से चर्चा करते हैं:

1. **उपभोग**

   उपभोग व्यय घरेलू क्षेत्र के द्वारा किया जाता है। यह एक वित्तीय वर्ष के दौरान अन्तिम उपयोगकर्त्ताओं के द्वारा बेची गई वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय को शामिल करता है। यह टिकाऊ वस्तुओं जैसे कार, फर्नीचर, इत्यादि तथा ग़ैर–टिकाऊ वस्तुओं जैसे भोजन, ईंधन, इत्यादि एवं सेवाओं जैसे बैंकिंग, स्वास्थ्य इत्यादि को समाहित करते हैं।

2. **निवेश**

   वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन के लिए व्यावसायिक फर्मों द्वारा साधनों में निवेश किया जाता है। यह व्यावसायिक स्थिर निवेश आवासीय निवेश एवं माल सूची निवेश अथवा स्टॉक में परिवर्तन को शामिल करता है।

3. **सरकारी व्यय**

   यह व्यय स्थानीय, राज्य एवं केन्द्रीय स्तर पर सरकारों द्वारा किया जाता है सरकार अपने कर्मचारियों के वेतन, सामाजिक सुरक्षा लाभों जैसे चिकित्सा लाभ, बेरोजगारी भत्ता इत्यादि के लिए व्यय का भुगतान करती है।

4. **विशुद्ध निर्यात**

विशुद्ध निर्यात को निर्यात एवं आयात के अन्तर के रूप में परिभाषित किया जाता है। निर्यात को विदेशियों द्वारा घरेलू स्तर पर उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय के रूप में देखा जा सकता है जबकि आयात घरेलू निवासियों के द्वारा विदेशी वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय होता है। जब निर्यात का मूल्य आयात के मूल्य से अधिक होता है तब विशुद्ध निर्यात धनात्मक होता है तथा इसका उल्टा भी।

व्यय विधि में निम्नलिखित सावधानियाँ अपनाई जानी चाहिए:

1. 'दोहरी गणना' की समस्या से बचने के लिए राष्ट्रीय आय में केवल अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य को शामिल किया जाना चाहिए।
2. राष्ट्रीय आय में पूर्व प्रयुक्त वस्तुओं की बिक्री एवं खरीद को शामिल नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि इन वस्तुओं को पहले से ही राष्ट्रीय आय में शामिल किया जा चुका है जिस समय इनका उत्पादन हुआ था। लेकिन इस प्रकार की वस्तुओं की बिक्री की सुविधा के लिए दलाली (कमीशन), एवं ब्रोकरेज एक तात्कालिक क्रिया है तथा इसे शामिल किया जाना चाहिए।
3. खुद काबिज मकान का आरोपित मूल्य शामिल किया जाना चाहिए।
4. उद्यम, परिवारों तथा सरकार तथा अचल पूँजी के स्व लेखा के मूल्य को शामिल किया जाना चाहिए।

उदाहरण 3.1: निम्न आँकड़ों से सकल घरेलू उत्पाद की गणना कीजिए:

मदें	मूल्य (करोड़ रुपए में)
1. व्यक्तिगत उपभोग व्यय	45000
2. सरकारी उपभोग व्यय	5000
3. सकल घरेलू स्थिर निवेश	5000
4. मालसूची में वृद्धि	1000
5. वस्तुओं एवं सेवाओं का निर्यात	6000
6. वस्तुओं एवं सेवाओं का आयात	7000
7. विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर	3500
8. मूल्यह्रास	4500

हल:

सकल घरेलू उत्पाद = 1 + 2 + 3 + 4 + 5 – 6

= 45000 + 5000 + 5000 + 1000 + 6000 – 7000

= 55,000 करोड़ रुपए

3.2.2 आय विधि

उत्पाद का मूल्य उत्पादन के साधनों को किए गए भुगतान के बराबर है। सामान्यतः चार उत्पादन के साधनों भूमि, श्रम, पूँजी तथा उद्यमी हैं, जिन्हें क्रमशः किराया, मजदूरी, ब्याज तथा लाभ के रूप में पारिश्रमिक दिया जाता है। इस विधि के अनुसार, राष्ट्रीय आय को सभी उत्पादन के साधनों को किए गए भुगतानों के पदों में मापा जाता है।

अतः इस दृष्टिकोण के आधार पर, कर्मचारियों का पारिश्रमिक, सकल प्रचालन अधिशेष, मिश्रित आय तथा विशुद्ध अप्रत्यक्ष करों का योग, बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद है, जो उत्पादन तथा आयात पर करों तथा उत्पादन पर प्रतिदान (आर्थिक सहायता) का अन्तर है। आय पक्ष दृष्टिकोण उत्पादन प्रक्रिया में सकल घरेलू उत्पाद के लिए विभिन्न साधनों के योगदान को दिखाता है।

1) **कर्मचारियों का पारिश्रमिकः** यह मजदूरी, वेतन, कर्मचारी लाभ जैसे नियोक्ता की पेंशन, सामाजिक सुरक्षा इत्यादि में योगदान का समावेश करता है। यह लेखांकन अवधि के दौरान नियोक्ता द्वारा कर्मचारियों को श्रम के लिए नकद या वस्तु रूप में दिए जाने वाला कुल पारिश्रमिक होता है। यह मजदूरी तथा वेतन (नकद या वस्तु रूप में) एवं नियोक्ता के सामाजिक अंशदान में विभाजित किया जाता है।

2) **सकल प्रचालन अधिशेष** : यह किराया, ब्याज, रॉयल्टी एवं लाभ के रूप में सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठानों से उत्पादन प्रक्रिया के दौरान विशुद्ध व्यावसायिक आय है। लाभ में लाभांश, निगम करों एवं प्रतिधारित आय को शामिल किया जाता है। केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (Central Statistical Office - CSO) "कुल उत्पादन के मूल्य में से मध्यवर्ती उपभोग, कर्मचारियों का पारिश्रमिक (स्व–नियोजित की श्रम आय का शामिल करते हुए), स्थिर पूँजी के उपभोग एवं विशुद्ध अप्रत्यक्ष करों के योग के अन्तर" के रूप में प्रचालन अधिशेष को परिभाषित किया जाता है। इस प्रकारः

सकल प्रचालन अधिशेष = किराया + ब्याज + रॉयल्टी + लाभ
= बाजार कीमत पर उत्पादन का मूल्य – मध्यवर्ती उपभोग – कर्मचारियों का पारिश्रमिक – स्थिर पूँजी उपभोग – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

3) **स्व–नियोजित की आयः** यह एक अनिगमित उद्यमों के मालिक अथवा मालिकों के परिवारों के द्वारा निष्पादित कार्य के लिए पारिश्रमिक है, जिसे मिश्रित आय भी कहा जाता है। पूँजी आय, श्रम आय लाभों की संयुक्त आय के रूप में अर्जित मिश्रित आय मालिक की आय (पूँजी, भूमि तथा कौशल के स्वामी (मालिक)) होती है। इस समूह की आय को मिश्रित आय के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि यह स्पष्ट नहीं है जो उनकी आय का अनुपात मजदूरी अथवा लाभ के समान है। मिश्रित आय प्रचालन अधिशेष से इस अर्थ में अलग है कि स्वनियोजितों के पूर्ववर्तीय उपलब्ध हैं, जबकि बाद में, निगम तथा अर्ध–निगम उद्यमों का उपार्जित होता है।

4) **उत्पादन तथा आयातों पर कर से उत्पादन पर प्रतिदानों का अन्तरः** भारत में पूर्ववर्ती अनिवार्य, गैर–वापसी भुगतानों या सामान्य सरकार अथवा संस्थानों से मिलकर बना होता है, वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन तथा आयात के सम्बन्ध में श्रम का रोजगार, तथा स्वामित्व अथवा भूमि का प्रयोग, उत्पादन में प्रयोग की गई इमारतों अथवा अन्य परिसम्पत्तियाँ। उत्तरार्द्ध में सभी प्रतिदान शामिल होते हैं जो केवल उत्पादन पर उन प्रतिदानों को छोड़कर जिन्हें घरेलू उत्पादक इकाइयाँ उत्पादन प्रक्रिया में संलग्न होने के कारण प्राप्त कर सकती हैं।

5) आय विधि में निम्नलिखित सावधानियाँ शामिल होनी चाहिएः
आय विधि के द्वारा राष्ट्रीय आय का सही आकलन करने के लिए निम्नलिखित सावधानियाँ लेनी होंगीः
   1) हस्तांतरण भुगतानों को शामिल नहीं किया जाना चाहिए।
   2) आकस्मिक लाभों जैसे लाटरियों से आय, राष्ट्रीय आय का भाग नहीं होना चाहिए।

3) अवैध कार्यों से प्राप्त आय (जैसे चोरी, तस्करी, इत्यादि) को सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए।

4) राष्ट्रीय आय में पुरानी वस्तुओं की बिक्री एवं खरीद से प्राप्त आय को शामिल नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन इस प्रकार की वस्तुओं की बिक्री की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए कमीशन तथा ब्रोकरेज के लिए किए गए भुगतान को शामिल किया जाना चाहिए।

5) धन कर, सम्पत्ति कर, उपहार कर को वर्तमान आय से भुगतान नहीं किया जाता है, इसलिए इन्हें राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाना चाहिए।

6) स्वयं के मकानों का आरोपित किराया शामिल किया जाना चाहिए।

7) स्व–उपभोग के लिए उत्पादन के मूल्य को शामिल किया जाना चाहिए।

बोध प्रश्न 1

1) व्यय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय आकलन में शामिल चरणों की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) राष्ट्रीय आय के आकलन में आय विधि, व्यय विधि से किस प्रकार भिन्न है? वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3.2.3 मूल्य वर्धित विधि (Value-Added Method)

इस विधि को उत्पादन विधि अथवा उत्पाद विधि से भी जाना जाता है। यह एक वित्तीय वर्ष में अर्थव्यवस्था की घरेलू सीमाओं में उत्पादन प्रक्रिया में प्रत्येक उत्पादक उद्यम के द्वारा किए गए योगदान को मापता है। मध्यवर्ती उत्पादन चरण में उपयोग की गई किसी भी वस्तुओं एवं सेवाओं को छोड़कर यह विधि उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के बाजार कीमत के योग के द्वारा आर्थिक क्रियाओं को मापती है। इस विधि के अंतर्गत, हम बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद को प्राप्त करने के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों द्वारा मूल्य वर्धन को जोड़ते हैं। प्रत्येक फर्म का मूल्य वर्धन इसके उत्पादन के मूल्य तथा अन्य फर्मों से क्रय की गई मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य का अन्तर होता है। दूसरे शब्दों में, यह वस्तुओं के विभिन्न चरणों पर मध्यवर्ती वस्तुओं से अन्तिम उत्पाद के मूल्य के अतिरिक्त है।

सकल मूल्य वृद्धि = सकल उत्पादन – मध्यवर्ती उपभोग

विशुद्ध मूल्य वृद्धि = सकल उत्पादन – मध्यवर्ती उपभोग – मूल्यह्रास

साधन लागत पर विशुद्ध मूल्य वृद्धि = NVA_{FC} = सकल उत्पादन – मध्यवर्ती उपभोग – मूल्यह्रास – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

घरेलू आय (NVA_{FC}) में विदेशों से विशुद्ध साधन लागत के योग द्वारा, हम राष्ट्रीय आय (साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन – NNP_{FC}) प्राप्त करते हैं, अर्थात्

राष्ट्रीय आय अथवा NNP_{FC} = सकल उत्पादन – मध्यवर्ती उपभोग – मूल्यह्रास – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर + विदेशों से विशुद्ध साधन आय

यह विधि विभिन्न चरणों में राष्ट्रीय आय को मापती है। मूल्य वर्धन का मुख्य लाभ यह है कि यह दोहरी गणना की समस्या की अवहेलना करता है।

उपर्युक्त तीनों विधियों द्वारा आकलित राष्ट्रीय आय अर्थात् आय विधि, व्यय विधि तथा मूल्य वर्धित विधि समान हैं, अर्थात्

राष्ट्रीय आय ≡ राष्ट्रीय उत्पाद ≡ राष्ट्रीय व्यय

(जहाँ ≡ सर्वसमिका को दिखाता है)।

मूल्य वृद्धि का आकलन

पद मूल्य वृद्धि उत्पादन इकाई द्वारा उत्पादन में प्रयोग किए गए मध्यवर्ती साधनों में जोड़े गए मूल्यों को संदर्भित करता है। मूल्य वृद्धि, उत्पादन के मूल्य तथा मध्यवर्ती साधनों की लागत के मध्य अन्तर है।

एक उदाहरण की सहायता से मूल्य वृद्धि की अवधारणा की व्याख्या करते हैं।

माना एक कपड़ा फर्म ने कपड़ों का निर्माण करने के लिए 4,000 रुपये मूल्य का कच्चा माल खरीदा तथा 1,000 रुपये मूल्य का श्रम मजदूरी पर रखा। मध्यवर्ती साधनों को 50,000 रुपये में खरीदा। कपड़ा फर्म ने अपने कपड़े के उत्पादन को 55,000 रुपये में बेच दिया। इस प्रकार कपड़ा फर्म के द्वारा मूल्य वृद्धि 5,000 रुपए है।

उत्पाद विधि में शामिल सावधानियाँ:

आय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना के लिए निम्नलिखित सावधानियाँ लेने की आवश्यकता है:

1. केवल साधन आय जो उत्पादकीय सेवाओं के प्रदान के द्वारा अर्जित की गई हैं को शामिल किया जाना चाहिए।
2. अवैध स्रोतों (जैसे तस्करी, चोरी इत्यादि) से अर्जित आय को पृथक किया जाना चाहिए।
3. पुरानी वस्तुओं की बिक्री तथा क्रय के माध्यम से अर्जित आय को राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन इस तरह की वस्तुओं की बिक्री को सुविधाजनक बनाने के लिए दिया गया कमीशन तथा दलाली का भुगतान शामिल होना चाहिए।
4. खुद–काबिज भवनों (इमारतों) का आरोपित किराया शामिल किया जाना चाहिए। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई मकान किराए पर है या स्वयं द्वारा उपयोग किया जाता है।
5. स्व उपभोग के लिए उत्पादन का मूल्य शामिल किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक किसान स्व उपभोग के लिए उसके द्वारा उत्पादित उत्पादन का एक भाग रखता है। यह बाजार में नहीं लाया जाता है, लेकिन यह उत्पादन में योगदान देता है।
6. परिवार के सदस्यों (घर में बनाने वालों को भोजन पकाने के लिए कहना) द्वारा घरेलू कार्यों को राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता है।

   दूसरी तरफ, वही भोजन यदि घरेलू सहायता (इसके लिए जिसको भुगतान किया जाता है) द्वारा बनाया जाता है तो उसको सकल घरेलू उत्पाद में शामिल किया जाता है।

उदाहरण 3.2: साधन लागत पर विशुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP_{FC}) की गणना निम्नलिखित आँकड़ों से कीजिए।

मदें	मूल्य (करोड़ रुपए में)
कच्चे माल की खरीद	300
मूल्यह्रास	120
बिक्री	2000
उत्पादन शुल्क	200
आरम्भिक स्टॉक	150
मध्यवर्ती उपभोग	480
अन्तिम स्टॉक	100

हल:

उत्पादन का मूल्य = बिक्री + स्टॉक में परिवर्तन

स्टॉक में परिवर्तन = अन्तिम स्टॉक – आरम्भिक स्टॉक

= 100 – 150= –50

अतः उत्पादन का मूल्य = 2000 + (–50)

= 1950 करोड़ रुपए

सकल मूल्य वृद्धि = उत्पादन का मूल्य – मध्यवर्ती उपभोग

= 1950 – 480 = 1470 करोड़ रुपए

NDP_{FC} = सकल मूल्य वृद्धि – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

NDP_{FC} = 1470 – 200 = 1270 करोड़ रुपए

उदाहरण 3.3:

एक फर्म दूसरी फर्मों से 80,000 रुपए के फल खरीद कर उनसे जैम बनाती है और जैम को बाजार में बेचती है। वह अपने श्रमिकों को मजदूरी के रूप में 50,000 रुपए का भुगतान करती है, कर के रूप में 20,000 रुपए का भुगतान करती है तथा उसका लाभ 40,000 रुपए है। इसका अपनी मूल्य वृद्धि क्या है?

हल:

मदें	मूल्य (रुपए में)
दूसरी फर्मों से खरीदे गए फलों का मूल्य	80,000
श्रमिकों को मजदूरी के रूप में किया गया भुगतान	50,000
करों का भुगतान	20,000
लाभ	40,000

लाभ = बिक्री आगम – मजदूरी का भुगतान – कर – मध्यवर्ती उपभोग

40,000 = बिक्री आगम – 50,000 – 20,000 – 80,000

बिक्री आगम = 40000 + 50000 + 20000 + 80000

= 1,90,000 रुपए

मूल्य वृद्धि = बिक्री – मध्यवर्ती उपभोग

= 1,90,000 – 80,000 = 1,10,000 रुपए

अतः मूल्य वृद्धि = 1,10,000 करोड़ रुपए

बोध प्रश्न 2

1) राष्ट्रीय आय मापन में दोहरी गणना की समस्या का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) मूल्य वर्धित विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना के दौरान अपनाई जाने वाली सावधानियाँ क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

3.3 समग्र बचत तथा धन (सम्पत्ति) के माप

बचत तथा धन एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं, लेकिन ये समान नहीं हैं। बचत आय का वह भाग है जिसे खर्च नहीं किया जाता है। दूसरे शब्दों में, बचत वर्तमान आय में से वर्तमान आवश्यकताओं पर खर्च का अन्तर है। जब हम एक देश की कुल बचत को उसकी राष्ट्रीय आय से विभाजित करते हैं तब हम बचत अनुपात प्राप्त करते हैं। दूसरी तरफ, धन की परिसम्पत्ति से दायित्वों के अंतर के रूप में गणना की जाती है। बचत, प्रवाह अवधारणा (समय की प्रति इकाई में मापा जाता है) है जबकि धन एक स्टॉक अवधारणा (समय के एक बिन्दु पर मापा जाता है) है। बचत को परिसम्पत्ति के संचय के रूप में अथवा देयता में कमी के रूप में लेते हैं; इसलिए बचत धन का योग है।

बचत के तीन महत्वपूर्ण माप निम्नलिखित हैं:

1. **निजी बचत (Private Saving - S_{pvt})** : यह निजी क्षेत्र द्वारा बचत है। निजी बचत निजी खर्च योग्य आय से उपभोग का अन्तर है। प्रतीकात्मक रूप से,

S_{pvt} = निजी खर्च योग्य आय – उपभोग

= (Y + NFPA – T + TR + INT) – C

जहाँ, Y = सकल घरेलू उत्पाद

NFPA = विदेशों से शुद्ध साधन भुगतान (Net factor payments from aboard)

T = कर (Taxes)

TR = सरकार से प्राप्त हस्तांतरण आय (Transfer earnings received from government)

INT = ब्याज आय (Interest income)

निजी बचत अनुपात = निजी बचत / निजी खर्च योग्य आय

2. सरकारी बचत **(Government Saving - S_{govt})**: यह विशुद्ध सरकारी अथवा बजट आधिक्य है। यह सरकारी आय का वस्तुओं एवं सेवाओं पर सरकारी व्यय पर आधिक्य है, अर्थात् बचत

S_{govt} = सरकारी आय – वस्तुओं एवं सेवाओं की सरकारी खरीद

$S_{govt} = (T - TR - INT) - G$

जहाँ,

T = कर

TR = हस्तांतरण भुगतान

INT = ब्याज भुगतान

G = वस्तुओं एवं सेवाओं की सरकारी खरीद

3. **राष्ट्रीय बचत (National Saving - S)**: राष्ट्रीय बचत एक अर्थव्यवस्था की संपूर्ण बचत है। यह निजी बचत तथा सरकारी बचत का योग है।

$S = S_{pvt} + S_{govt}$

$S = [Y + NFPA - T + TR + INT - C] + [T - TR - INT - G]$

$= Y + NFPA - C - G$

$= GNP - C - G$

उपर्युक्त समीकरण दिखाता है कि राष्ट्रीय बचत सकल राष्ट्रीय उत्पाद का निजी तथा सरकारी क्षेत्रों की वर्तमान आवश्यकताओं पर आधिक्य के समान है।

हम जानते हैं कि:

GNP अथवा $Y = C + I + G + NX$

Y का मूल्य राष्ट्रीय बचत समीकरण में रखने पर, हम प्राप्त करते हैं:

$S = [C + I + G + NX] + NFPA - C - G$

$S = I + NX + NFPA$

$S = I + CA$

जहाँ, $CA = NX + NFPA$; अर्थात चालू खाता शेष है।

इसके साथ ही,

$S = S_{pvt} + S_{govt}$

और $S_{pvt} = S - S_{govt}$

$= I + CA - S_{govt}$ (जहाँ $S = I + CA$)

अतः निजी बचत तीन तरीके से उपयोग की जा सकती है:

1. नवीन पूँजी निवेश (I) को कोष उपलब्ध कराना;
2. सरकारी बचत (S_{govt}) घाटे के लिए वित्त उपलब्ध कराना
3. परिसम्पत्ति अर्जन अथवा विदेशियों को ऋण देना।

3.4 वास्तविक तथा मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद

मौद्रिक चरों की गणना उनकी प्रचलित कीमत पर की जाती है तथा वास्तविक चरों की गणना आधार वर्ष पर मौद्रिक चरों को मुद्रा–स्फीति अथवा विस्फीति से समायोजित करके की जाती है। आधार वर्ष अथवा स्थिर वर्ष का चयन सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। मौद्रिक चर में परिवर्तन, मात्रा में परिवर्तन तथा कीमत में परिवर्तन दोनों (संयुक्त) प्रभावों

को प्रदर्शित करता है जबकि वास्तविक चर, चर परिवर्तन अथवा मात्रा में परिवर्तन की सही तस्वीर उपलब्ध कराता है।

वास्तविक सकल घरेलू उत्पादः इसे मौद्रिक राष्ट्रीय आय भी कहा जाता है तथा प्रचलित वर्ष की कीमतों पर वस्तुओं एवं सेवाओं को प्रचलित वर्ष की कीमतों पर वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह आर्थिक वृद्धि को मापने का अपर्याप्त (खराब) संकेतक है। यह प्रचलित वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं को प्रचलित वर्ष की कीमतों के गुणनफल के द्वारा प्राप्त किया जाता है। वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद अथवा स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद अर्थव्यवस्था की वास्तविक वृद्धि को मापता है। यह प्रचलित वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं को आधार वर्ष की कीमतों के गुणनफल से प्राप्त किया जाता है। वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि काल पर्यन्त अर्थव्यवस्था के निष्पादन में सुधार को इंगित करता है को बताता है। यह मात्रा में परिवर्तन को प्रदर्शित करता है।

$$\text{स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद} = \frac{\text{प्रचलित कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद}}{\text{प्रचलित वर्ष के लिए कीमत सूचकांक}} \times \text{आधार वर्ष कीमत सूचकांक}$$

जहाँ, आधार वर्ष = आधार वर्ष का कीमत सूचकांक हमेशा 100 लिया जाता है।

उदाहरण 3.4: मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद को वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में रूपांतरित कीजिए।

i) प्रचलित वर्ष की कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद 2,50,000 रुपए है तथा प्रचलित वर्ष के लिए कीमत सूचकांक 250 रुपए है।

ii) प्रचलित वर्ष की कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद 4,00,000 रुपए है तथा प्रचलित वर्ष के लिए कीमत सूचकांक 400 रुपए है।

हलः

i) स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद = $\frac{2,50,000}{250} \times 100 = 1,00,000$ रुपए

ii) स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद = $\frac{4,00,000}{400} \times 100 = 1,00,000$ रुपए

3.4.1 कीमत सूचकांक

आधार वर्ष की कीमतों के सापेक्ष, एक कीमत सूचकांक विशिष्ट वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमत के औसत स्तर को मापता है। दूसरे शब्दों में, यह आधार वर्ष के सापेक्ष प्रचलित कीमत स्तर का एक माप है।

मुख्य रूप से दो कीमत सूचकांक हैं:

1. सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीतिकारक (GDP Deflator)
2. उपभोक्ता कीमत सूचकांक (Consumer Price Index - CPI)

सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीतिकारक

सकल घरेलू उत्पाद में सम्मिलित की गई वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतों के औसत स्तर को मापता है। यह मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद से वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में रूपांतरित करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। यह मूल्य वृद्धि के प्रभाव को हटाता है तथा यह भौतिक उत्पाद में वास्तविक परिवर्तन को निर्धारित करता है।

यह दिए गए वर्ष में मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद का वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद से अनुपात है। दूसरे शब्दों में, यह बास्केट परिवर्तन के साथ एक कीमत सूचकांक है। प्रतीकात्मक रूप में,

$$\text{सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक} = \frac{\text{मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद}}{\text{वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद}} \times 100$$

उदाहरणः यदि मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद 21,100 करोड़ रुपए है तथा वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद 20,000 करोड़ रुपए है, तब

$$\text{सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक} = \frac{21,1000}{20,000} \times 100 = 105.5$$

हम सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक के उपयोग के द्वारा मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद में परिवर्तित कर सकते हैं, अर्थात्:

$$\text{वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद} = \frac{\text{मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद}}{\text{सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक}} \times 100$$

उपभोक्ता कीमत सूचकांक (Consumer Price Index - CPI)

उपभोक्ता कीमत सूचकांक उपभोक्ता वस्तुओं एवं सेवाओं के स्थिर (निश्चित) बॉस्केट की खरीद कीमतों को मापता है। बॉस्केट में वस्तुओं एवं सेवाओं की निश्चित सूची जैसे भोजन कपड़ा, ईंधन तथा घर को रखा जाता है। उपभोक्ता कीमत सूचकांक की मासिक आधार पर गणना की जाती है। जब सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीतिकारक बॉस्केट में परिवर्तन के साथ कीमत सूचकांक है। उपभोक्ता कीमत सूचकांक की गणना आधार अवधि में उसी बॉस्केट की मदों की लागत द्वारा उपभोक्ता मदों के बॉस्केट के प्रचलित लागत के भागफल द्वारा की जाती है। उपभोक्ता कीमत सूचकांक एक एकल सूचकांक है जिसे एक अर्थव्यवस्था में प्रचलित विभिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतों को मापने में उपयोग किया

$$\text{उपभोक्ता कीमत सूचकांक} = \frac{\text{प्रचलित वर्ष में बॉस्केट की कीमत}}{\text{आधार वर्ष में बॉस्केट की कीमत}} \times 100$$

मुद्रा स्फीति दर (Inflation Rate)

मुद्रा स्फीति की दर वह है जिस पर कीमतों का सामान्य स्तर प्रति अवधि बढ़ता है। मुद्रा स्फीति दर को मापने के लिए कीमत सूचकांक का उपयोग किया जा सकता है। इसे किसी अवधि में प्रतिशत परिवर्तन के रूप में मापा जा सकता है। इसकी गणना इस प्रकार की जाती है।

$$\text{मुद्रा स्फीति दर} = \frac{P_2 \; P_1}{P_1} \times 100$$

जहाँ, P_1 पूर्व अवधि में कीमत सूचकांक का मूल्य है तथा P_2 प्रचलित अवधि में कीमत सूचकांक का मूल्य है।

यदि सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक पूर्व अवधि में 100 से बढ़कर प्रचलित अवधि में 112 हो जाता है तब मुद्रा स्फीति दर की गणना इस प्रकार की जाती है:

$$\text{मुद्रा स्फीति दर} = \frac{112 - 100}{100} \times 100 = 12\ \%$$

3.5 सकल घरेलू उत्पाद की सीमाएँ

सकल घरेलू उत्पाद आर्थिक प्रगति का एक उपयोगी माप है, लेकिन आर्थिक कल्याण का नहीं। परन्तु आर्थिक प्रगति के माप के रूप में सकल घरेलू उत्पाद की निश्चित सीमाएँ हैं, प्रमुख सीमाएँ इस प्रकार हैं:

1) **सकल घरेलू उत्पाद के संघटक:** यदि सकल घरेलू उत्पाद युद्ध उत्पादों (उदाहरण के लिए, टैंक, बॉम्ब, हथियार इत्यादि) के उत्पादन में वृद्धि के कारण बढ़ता है तब आर्थिक कल्याण नहीं बढ़ेगा।

2) **जनसंख्या प्रभाव की अवहेलना की जाती है:** एक देश की राष्ट्रीय आय उच्च हो सकती है लेकिन देश की उच्च जनसंख्या भी हो सकती है।

3) **कुछ लोगों के द्वारा अधिक योगदान:** देश में बहुत विषमता हो सकती है, सकल घरेलू उत्पाद उच्च हो सकता है लेकिन इसमें कुछ लोगों के द्वारा योगदान हो सकता है। इसलिए, यदि जनसंख्या का एक छोटा सा हिस्सा सकल घरेलू उत्पाद में उच्च हिस्सा रखता है और बचा हुआ सकल घरेलू उत्पाद का हिस्सा अधिक लोगों के द्वारा पूरा किया जाता है, तब आर्थिक विकास एक अर्थव्यवस्था के गरीबतम तबके तक नहीं पहुँच पाएगा।

4) **सकल घरेलू उत्पाद पर्यावरण की गुणवत्ता की अवहेलना करता है:** उत्पादन पर्यावरण में गिरावट में वृद्धि के साथ बढ़ सकता है। उच्च सकल घरेलू उत्पाद होने का तात्पर्य यह नहीं है कि लोगों के जीवन की गुणवत्ता बेहतर है अगर पानी, हवा आदि अधिक प्रदूषित हैं।

5) **केवल वैध उत्पाद शामिल हैं:** सकल घरेलू उत्पाद वैध बाजारों में वस्तुओं एवं सेवाओं को उत्पादित किया जाता है तथा बेचा जाता है को शामिल करता है जिनका बाजार में लेनदेन नहीं होता है, यह निश्चित उत्पादकीय कार्यों की भी अवहेलना करता है। उदाहरण के लिए, घर में कार्य करने की सेवाएँ, अपने बच्चों की देखभाल करने तथा परिवार के अन्य सदस्यों की देखभाल करने को सकल घरेलू उत्पाद से अलग रखा जाता है।

उपर्युक्त विचारों में, सकल घरेलू उत्पाद सामाजिक तथा आर्थिक कल्याण का एक पर्याप्त सूचकांक नहीं हो सकता है। सकल घरेलू उत्पाद तथा कल्याण धनात्मक रूप से सम्बन्धित नहीं हो सकते हैं। कई स्थितियों में, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि आर्थिक कल्याण में वृद्धि नहीं करता है।

बोध प्रश्न 3

1) बचत के घटक क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

2) वास्तविक तथा मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद के मध्य अन्तर का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3.6 भुगतान शेष : खुली अर्थव्यवस्था के लिए राष्ट्रीय आय लेखांकन

एक देश का भुगतान शेष एक विशिष्ट समयावधि सामान्यतः एक वर्ष अथवा एक वर्ष की तिमाही में देश के निवासियों एवं शेष विश्व के मध्य सभी आर्थिक लेनदेनों का विवरण है। भुगतान शेष एक देश तथा शेष विश्व के मध्य समस्त मौद्रिक लेनदेनों का सार है, जो व्यक्तिगत, फर्मों तथा सरकारी निकायों के द्वारा बना होता है।

इस प्रकार, भुगतान संतुलन (शेष) समस्त बाह्य दृश्य तथा अदृश्य लेनदेनों का विवरण रखता है। भुगतान शेष एक खाता है (i) जो किसी देश के निवासियों को वस्तुओं एवं सेवाओं एवं अन्य अदृश्य मदों की बिक्री के एक विशिष्ट आवधिक खाते में शेष विश्व से प्राप्त करता है, (ii) अन्य देशों से पूँजी हस्तांतरण, (iii) जो इन निवासियों ने उन सभी मदों की खरीदों के आधार पर दूसरे देशों को भुगतान किया है, तथा (iv) शेष विश्व के लिए घरेलू निवासियों का पूँजीगत हस्तांतरण। इन लेनदेनों में लेनदारी प्रविष्टि तथा देनदारी प्रविष्टि दोनों हैं, देश की वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यात एवं आयात और वित्तीय पूँजी एवं वित्तीय हस्तांतरण के भुगतान का विवरण रखता है। शेष विश्व से समस्त प्राप्तियाँ लेनदारी के रूप में दर्ज की जाती हैं, जबकि बाकी सभी भुगतान शेष विश्व को देनदारी के रूप में दर्ज की जाती है। आपको ध्यान देना चाहिए कि भुगतान शेष खाता हमेशा संतुलन में रहता है, क्योंकि यह "द्विअंकण बही खाता प्रणाली" द्वारा बनाए रखा जाता है। किसी देश के लिए कोषों का स्रोत अर्थात निर्यात, ऋण तथा निवेश की प्राप्तियाँ लेनदारी मदों में प्रविष्टि किए जाते हैं, जबकि कोषों का उपयेाग अर्थात् आयातों अथवा विदेशों में निवेश देनदारी मदों में प्रविष्टि किए जाते हैं। भुगतान शेष में दो भाग शामिल हैं अर्थात् चालू खाता और पूँजी खाता।

3.6.1 चालू खाता

भुगतान शेष का चालू खाता उन सभी लेनदेनों जो वस्तुओं एवं सेवाओं तथा पक्षीय हस्तांतरण से सम्बन्धित है को शामिल करता है। यह वर्तमान में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के भुगतान से सम्बन्धित है।

अतः चालू खाते के शेष को कुल व्यापार शेष, सेवाओं के शेष तथा एकपक्षीय हस्तांतरण के शेष के कुल योग के रूप में आकलित किया जा सकता है।
चालू खाते में शामिल मदें निम्नलिखित हैं:

1) **व्यापार शेष (Balance of Trade) :** यह केवल दृश्य वस्तुओं के निर्यात एवं आयात को शामिल करता है। निर्यात तथा आयात का अन्तर व्यापार शेष प्रदान करता है।

2) **सेवाओं का शेष (Balance of Services)** : यह सभी अदृश्य लेनदेनों जैसे सेवाएँ (यात्रा, बीमा बैंकिंग, समाचार एजेंसी सेवाएँ इत्यादि), सहायता, हस्तांतरण इत्यादि को शामिल करता है।

3) **एकपक्षीय हस्तांतरण (Unilateral Transfers)** : ये लेनदेन एक देश से अन्य देश को बिना किसी वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद जैसे सहायता, उपहार इत्यादित के द्वारा किया जाता है।

3.6.2 पूँजी खाता

यह उन सभी लेनदेनों का विवरण रखता है जो सरकार की सम्पत्ति या देयता में बदलाव का कारण बनते हैं। यह एकदेश तथा शेष विश्व के मध्य सभी पूँजीगत हस्तांतरणों जैसे ऋण तथा निवेश, व्यावसायिक ऋणों को शामिल करता है। यह निम्नलिखित को सम्मलित करता है:

1) **विदेशी निवेश (Foreign Investment)** : विदेशी निवेश दो प्रकार का होता है:

   क) **विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (Foreign Direct Investment - FDI)**: इसका अर्थ है विदेशी नागरिकों या संस्थाओं द्वारा परिसम्पत्ति की खरीद तथा उसी समय इसका नियंत्रण प्राप्त करना, और अन्य देशों में एक फर्म द्वारा एक देश में फर्म का अधिग्रहण।

   ख) **प्रतिभूति निवेश (Portfolio Investment)**: यह एक ऐसी परिसम्पत्ति का अधिग्रहण है जो क्रेता को परिसम्पत्ति पर नियंत्रण नहीं देता है, जैसे विदेशों में शेयरों अथवा ऋणपत्रों (बॉण्ड्स) की खरीद।

2) **ऋण**: यह सभी अल्पावधि एवं दीर्घ अवधि तथा बाह्य व्यावसायिक उधारों (External Commercial Borrowings - ECB) को शामिल करता है।

3) **बैंकिंग पूँजी:** यह विदेशी नागरिकों द्वारा विदेशी करेंसी जमाओं को शामिल करता है।

कुल भुगतान शेष चालू खाता शेष एवं पूँजी खाता शेष के योग द्वारा प्राप्त किया जाता है। एक देश के चालू खाता में घाटा हो सकता है। इस प्रकार के घाटे को पँजी खाते के अतिरिक्त अथवा विदेशी विनिमय कोष में कमी के द्वारा क्षतिपूरित किया जाता है। उसी प्रकार, चालू खाते में अतिरेक को पूँजी खाते में घाटे अथवा विदेशी विनिमय कोष के द्वारा क्षतिपूरित किया जाता है। इस प्रकार लेखांकन दृष्टि से भुगतान शेष हमेशा संतुलन में रहता है।

भारत के भुगतान शेष की संरचना

निम्नलिखित तालिका में हम वर्ष 2018–19 के लिए भारत के भुगतान शेष की प्रवृष्टियों को प्रस्तुत करते हैं ताकि आपको विभिन्न घटकों के बारे में पता चल सके:

मदें	2018–19 (दस लाख अमरीकी डॉलर में)
I चालू खाता	
1. आयात	517519
2. निर्यात	337237
3. व्यापार शेष (1–2)	– 180283
4. अदृश्य (कुल)	123026
5. चालू खाता शेष	– 257256
II पूँजी खाता	
a) बाह्य सहायता (कुल)	3413
b) बाह्य व्यावसायिक ऋण (कुल)	10416
c) अल्पकालिन ऋण	2021
d) बैंकिंग पूँजी (कुल)	7433
e) विदेशी निवेश (कुल)	30094
f) अन्य पूँजी (कुल)	1026
पूँजी खाता शेष (a+b+c+d+e+f)	54403
III त्रुटि एवं चूक	**– 486**
IV कुल भुगतान	**– 3339**
कुल मौद्रिक संचलन	– 3339

स्रोत: आर्थिक समीक्षा 2019-20

बोध प्रश्न 4

1) भुगतान शेष में शामिल मदें क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) व्यापार शेष तथा भुगतान शेष के मध्य अन्तर का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3.7 सार संक्षेप

इस इकाई में हमने सीखा है कि राष्ट्रीय आय को मापने की प्रमुख तीन विधियाँ हैं, अर्थात् आय विधि, व्यय विधि तथा उत्पादन अथवा मूल्य वर्धित विधि है। आय विधि में राष्ट्रीय आय के माप के लिए सभी साधन आय के कुल का योग ध्यान में रखा जाता है।

व्यय विधि एक अवधि के दौरान उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय से सम्बन्धित है।

मूल्य वर्धित विधि में, एक अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के द्वारा मूल्य वर्धन को जोड़ा जाता है। राष्ट्रीय आय का मूल्य चाहे वह आय विधि अथवा व्यय विधि अथवा मूल्य वर्धित विधि द्वारा गणना की जाए वह समान होता है।

हमने यह भी चर्चा की है कि बचत, आय का वह भाग है जिसका वर्तमान समय में उपभोग नहीं किया जाता है; बल्कि इसे भविष्य में उपभोग के लिए अलग रखा गया है। बचत के तीन प्रमुख माप हैं: निजी बचत, सरकारी बचत तथा राष्ट्रीय बचत। आर्थिक प्रगति के माप के लिए, हम मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद की अपेक्षा वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद को मूल्य में वृद्धि के लिए पूर्व नियंत्रण के रूप में प्रधानता देते हैं।

बाद में हमने भुगतान शेष पर चर्चा की, जो सभी आर्थिक लेनदेनों का व्यवस्थित विवरण है जो एक देश तथा शेष विश्व के मध्य होता है। भुगतान शेष के दो घटक : चालू खाता तथा पूँजी खाता है। चालू खाता राष्ट्रों के मध्य सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यात तथा आयात से सम्बन्धित हैं। जबकि पूँजी खाता पूँजी के अंतर्वाह और बहिर्वाह को दिखाता है।

3.9 बोध प्रश्न के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) उपभाग 3.2.1 का संदर्भ देखिए तथा उत्तर दीजिए।
2) आय विधि उत्पादन के साधनों की साधन आय की व्याख्या करती है जबकि व्यय विधि अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं पर किए गए व्यय से सम्बन्धित है। यह उपभाग 3. 2.1 तथा 3.2.2 में संदर्भित है।

बोध प्रश्न 2

1) दोहरी गणना की समस्या तब उत्पन्न होती है जब एक से ज्यादा बार लेनदेन किया जाता है। यह उपभाग 3.2.3 में संदर्भित है।
2) इस उपभाग 3.2.2 के अंतर्गत सावधानियों के शीर्षक में संदर्भित है।

बोध प्रश्न 3

1) बचत के तीन माप सार्वजनिक बचत (सरकारी बचत), निजी बचत तथा राष्ट्रीय बचत है। यह भाग 3.3 में संदर्भित है।
2) वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद स्थिर कीमतों अथवा आधार वर्ष की कीमतों पर आधारित होती है जबकि मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद प्रचलित कीमतों पर आधारित किया जाता है। यह भाग 3.3 में संदर्भित है।

बोध प्रश्न 4

1) भुगतान शेष के चालू खाते में व्यापार शेष, सेवाओं का शेष तथा एकपक्षीय भुगतान में शामिल किए जाते हैं। उपभाग 3.6.1 में संदर्भित है।
2) व्यापार शेष दृश्य वस्तुओं के व्यापार को शमिल करता है जबकि भुगतान शेष दृश्य एवं अदृश्य मदों को शामिल करता है। यह भाग 3.6 में संदर्भित है। ।